नेति नेति *चरैवेति चरैवेति*

आपणे लोक संगीत, कला, साहित्य, संस्कृति रो मान, धोरा री धरती रो सम्मान

सीमा मिश्रा राजस्थान लोक संगीत-कला अकादमी पंजि०

**(एक प्रयास... राजस्थानी लोक संगीत- कला,
संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण, संवर्धन एवं सृजन का.....)**

Regd. Office

29, Ganga Colony Near Sadhna Hospital Khatipura Road jaipur 302012
Mob. : +91 7727976655 | +91 7727979988
E-mail : seemamishrarlskakadami@gmail.com

Social Media :	Website :
/seemamishrasangeetkalaakadami	seemamishra-rajasthanloksangeet-kalaakadami.com
/seemamishraloksangeetkalaakadami	seemamishra-rajasthanloksangeet-kalaakadami.in
@seemamishra-sangeetkalaakadami	seemamishra-rajasthanloksangeet-kalaakadami.org

नेति नेति *चरैवेति चरैवेति*

आपणे लोक संगीत, कला, साहित्य, संस्कृति रो मान,
धोरा री धरती रो सम्मान

सीमा मिश्रा राजस्थान लोक संगीत-कला अकादमी पंजि०

(एक प्रयास... राजस्थानी लोक संगीत- कला,
संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण, संवर्धन एवं सृजन का.....)

अकादमी का संक्षिप्त उद्देश्य एवं शुभ संकल्प

भूतकाल का गौरव, वर्तमान की पीड़ा और भविष्य के सुनहरे सपने ही समाज में नई जागृति लाते हैं। सीमा मिश्रा लोक संगीत, कला अकादमी दिव्य एवं भव्य राजस्थान की वर्तमान ओर आने वाली नई पीढ़ी में भूतकाल का गौरव और सृजन की नई प्रेरणा के साथ राजस्थान की गौरवमयी एवं समृध्दशाली सांस्कृतिक धरोहर लोक गीत, संगीत, चित्रकला, हस्तकला, साहित्य के संरक्षण, संवर्धन एवं सृजन की नई प्रेरणा के साथ राजस्थानी लोक गीतों के माध्यम से इनके विविध रूपों को बढ़ावा देने के एक सशक्त सामूहिक प्रयास का सांगठनिक स्वरूप है।

- राजस्थानी लोक संगीत कला, साहित्य, सामाजिक एवं सांकृतिक मूल्यों के दर्शन तथा चिंतन के मूल सिद्धांतो का प्रचार–प्रसार, संरक्षण एवं संवर्धन के साथ इन कार्यों में सशक्त भूमिका निभाने वाले व्यक्ति, कलाकार, साहित्यकार सामाजिक संगठन, भामाशाह को सम्मानित एवं प्रोत्साहित करना।
- राजस्थानी लोक गीत, संगीत, नृत्य के विविध विधाओं सहित राजस्थानी चित्रकला, नाटक, साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में संस्था द्वारा आदर्श अनुसंधान केंद्र, अध्ययन केंद्र एवं संग्राहलय की स्थापना करना।
- राजस्थान की लुप्त हो रही कलाओं, साहित्य एवं संस्कृति के पुनरुत्थान के सशक्त प्रयास करते हुए कलाकारों को उपयुक्त मंच उपलब्ध कराकर उनकी कला को समुन्नत करते हुए प्रचार–प्रसार करना
- राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों की छिपी हुई प्रतिभाओं एवं उनके हुनर को सम्मानित करते हुए उनकी पहचान को पूरे विश्व भर में पहुँचाना।

नेति नेति

चरैवेति चरैवेति

आपणे लोक संगीत, कला, साहित्य, संस्कृति रो मान,
धोरा री धरती रो सम्मान

सीमा मिश्रा राजस्थान लोक संगीत-कला अकादमी पंजि०

**(एक प्रयास... राजस्थानी लोक संगीत- कला,
संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण, संवर्धन एवं सृजन का.....)**

- राजस्थान की लोक–कला, चित्रकला, हस्तकला एवं परंपरागत शास्त्रीय नृत्य–संगीत प्रतियोगिता का आयोजन, संरक्षण एवं संवर्धन के साथ प्रतिष्ठित एवं नवोदित कलाकारों को सम्मान प्रदान करना ।
- भारत के गांव ढाणी तक पहुँच कर राजस्थान के प्रतिभावान लोगों को सम्बल एवं सहयोग प्रदान करना ।
- राजस्थान के कलाकारों, महिलाओं, को स्वरोजगार उपलब्ध कराने एवं उनके सशक्तिकरण पर सशक्त प्रयास करना ।
- देश दुनिया में राजस्थान की कलात्मक गतिविधियों का संचालन, कला प्रदर्शनी का आयोजन करना ।

आहवान :

राजस्थान की मिट्टी भारत माता के मस्तक का चन्दन है, जिसकी सुगन्ध से भारत माता सदैव अपने ऐश्वर्य के साथ महकती रहती है । त्याग तपस्या और बलिदान की अनुपम धरा गौरवशाली इतिहास अतुल्य सांस्कृतिक विरासत एवं समृद्ध परंपराओं की संगमस्थली महान सूरवीरों की जन्म स्थली राजस्थान के लोक कला, संगीत, साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण, संवर्धन, सृजन रूपी पवित्र कार्य में सीमा मिश्रा राजस्थान लोक संगीत कला अकादमी के सदस्य बनकर हम सब तन–मन–धन से सहभागी बनें । यह अपेक्षा है कि आप इस पुनीत कार्य में अपना शारीरिक, बौद्धिक और आर्थिक सहयोग देकर राजस्थान के नव–निर्माण में भागीदार बनें । आपके द्वारा अर्पित आर्थिक सहयोग आयकर की धारा 80-G के तहत करमुक्त रहेगा ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

सीमा मिश्रा (मरू कोकिला)
राजस्थानी लोक गायिका
संस्थापक, अध्यक्ष
सीमा मिश्रा राजस्थान
लोक संगीत-कला अकादमी

आपणे लोक संगीत, कला, साहित्य, संस्कृति रो मान,
धोरा री धरती रो सम्मान

सीमा मिश्रा राजस्थान लोक संगीत-कला अकादमी पंजि०

**(एक प्रयास... राजस्थानी लोक संगीत- कला,
संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण, संवर्धन एवं सृजन का.....)**

संक्षिप्त परिचय

**मरू कोकिला सीमा मिश्रा प्रख्यात विश्व प्रसिद्ध राजस्थानी लोक गायिका (राजस्थान की लता)
एवं संस्थापक, अध्यक्ष: सीमा मिश्रा राजस्थान लोक संगीत–कला अकादमी**

किसी भी प्रदेश का लोकसंगीत वहां की जीवनशैली का हमेशा से अभिन्न अंग रहा है, इसकी महता अतुलनीय है.... देवेन्द्र सत्यार्थी के अनुसार लोकगीत किसी संस्कृति के मुँहबोले चित्र है.... राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि लोकगीतो में धरती गाती है,पर्वत गाते है,नदियाँ गाती है,फसले गाती हैं, लोकगीत जनता की भाषा है।

वहीं गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने लोकगीतो को संस्कृति का सुखद संदेश लाने वाली कला कहा है। बात मरूभूमि राजस्थान के लोकसंगीत की करे तो राजस्थानी लोकगीतों की कोमलता माधुर्य अदभुत है,पर इनमें भी अगर बात करे लोकगायिकाओ की तो सीमा मिश्रा की सुरीली आवाज अढाई दशको से श्रोताओ के मन से गई ही नहीं यह बात अपने आप में अद्वितीय है ।

विश्व विख्यात राजस्थानी लोक गायिका राजस्थान की बेटी, राजस्थान की मरू कोकिला तथा साक्षात सरस्वती पुत्री सीमा मिश्रा जी जिनके कंठ में साक्षात सरस्वती विद्यमान है। जिन्हें राजस्थान की लता के नाम से भी राजस्थान के लोग संबोधित करते हैं तथा जिनको राजस्थान के विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में पढ़ाया और बताया भी जाता है। मरू कोकिला सीमा मिश्रा जी ने हमेशा परिमाण के बजाय गुणवत्ता को अधिक महत्व दिया है इसलिए उनके द्वारा गाए गए हर गीत अपने

आप में अनोखे और बेहतरीन है। जिनमें राजस्थान की कला संस्कृति गरिमा और शौर्य जीवंत दर्शित होते हैं। इन्होंने राजस्थान की कला संस्कृति तथा राजस्थान के गौरव और राजस्थान के शौर्य को अपने गीतों के माध्यम से उसके मूल स्वरूप को यथावत बनाए रखते हुए इनके संरक्षण, संवर्धन में नवसृजन के साथ अपना सर्वस्व गायन के माध्यम से देती आ रही है।

इनके गीत राजस्थान ही नहीं देश– दुनिया के कोने कोने में सुने जाते हैं । आज सीमा मिश्रा राजस्थानी लोकसंगीत का एक दीप्तिमान सितारा है.....धनकुबेरो एवं भारत के बड़े उद्योगपतियो की जन्मनगरी और सर्वाधिक शहादत और सैनिक देने वाले शेखावाटी के सिरमौर जिले झुन्झूनू के बिसाऊ में सरस्वती स्वरूपिणी सीमा मिश्रा का जन्म 3 नवम्बर 1976 को हुआ।

पर संगीत के क्षेत्र में सीमा मिश्रा ने पहला कदम अणुनगरी कोटा से रखा, वहाँ की स्थानीय आर्केस्ट्रा के माध्यम से सीमा मिश्रा जी ने गायिकी का विधिवत सफर 1993 से शुरू किया, जो आज तक अनवरत रूप से जारी है, अपनी माटी के गीत अपने पुरखो के गीत इन पच्चीस वर्षो से लगातार सीमा मिश्रा जी ने गाकर राजस्थानी लोकसंगीत लोकसंस्कृति को सहेज रखा है.... सच में सीमा मिश्रा जी राजस्थानी लोकसंगीत की सच्ची ध्वजावाहिका है।

इन पच्चीस वर्षो में अनेक राज्य सरकार तथा सामाजिक सांस्कृतिक संगठनों द्वारा सीमा मिश्रा जी को पूरे भारतवर्ष में हजारों गरिमामई सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है । राजस्थान के मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल के कर कमलों द्वारा मरू कोकिला राजस्थान, तथा राजस्थान की लता जैसे गौरवशाली सम्मानों से अलंकृत किया गया है । वहीं कुछ गरिमामई सम्मान जो सीमा मिश्रा जी के दिल के बहुत करीब है । इन्होंने जानकारी देते हुए बताया उनमें कुछ प्रमुख रूप से "दूरदर्शन मोस्ट फेमस अवार्ड", " कुरजां बेटी सृष्टि रतन सम्मान, झुंझुनू नगर कला मंच द्वारा राजस्थान कोकिला सम्मान, शेखावाटी लोक कला संस्थान द्वारा राजस्थान रत्न, मरुधर रत्न सम्मान, राजस्थान गौरव सम्मान, राष्ट्रीय विप्र फाउंडेशन द्वारा स्वयं सिद्धा एवं नमनश्री सम्मान, 5 सितम्बर 2022 को शिक्षक दिवस के अवसर पर कोटा में लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी एवं केन्द्रीय शिक्षा मंत्री, भारत सरकार धर्मेन्द्र प्रधान जी द्वारा लोक संगीत कला के क्षेत्र में

अतिविशिष्ट उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। राजस्थान प्रदेश भारतीय जनता पार्टी द्वारा केन्द्रीय सस्कृति मंत्री अर्जुन राम मेघवाल जी के कर कमलों द्वारा राजस्थान मरू कोकिला सम्मान, राजस्थान संगीत रत्न सम्मान, राजस्थान रत्न तथा सीमा मिश्रा की जन्म स्थली बिसाऊ नगर द्वारा नगर तनया सम्मान,"राजस्थानी फिल्म प्रोत्साहन अवार्ड", "विवेकानंद गौरव सम्मान 2020","विप्र अलंकरण अवार्ड",सम्पर्क क्रांति परिवार द्वारा 2022 में स्वरकोकिला "लता मंगेशकर अवार्ड अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दिया गया है.... महानिदेशक नागरिक सुरक्षा एवं महानिदेशक गृह रक्षा राजस्थान द्वारा उनकी संगीत के क्षेत्र में अति उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रशस्ति पत्र दिया गया.... राजस्थान फिल्म फेस्टिवल अवार्ड 2015 प्रसिद्ध फिल्म निर्माता

निर्देशक सुभाष घई द्वारा सीमा मिश्रा को दिया गया.... गोड़ सनाढय फाउण्डेशन द्वारा सीमा मिश्रा को विप्र विभूषण अंलकरण से अलंकृत किया गया.....वहीं सम्पर्क क्रांति परिवार द्वारा ही "राष्ट्र शक्ति शिरोमणी अवार्ड "भी दिया गया ....

राजस्थान ब्राह्मण संघ कोलकाता द्वारा "भरत व्यास"अवार्ड, सुर संगम संस्थान द्वारा मास्टर मदन अखिल भारतीय संगीत प्रतियोगिता में सुगम संगीत में प्रथम स्थान और लोकगीत में बाल वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त किया जो कि मशहूर फिल्म संगीतकार नौशाद अली साहब जी और तत्कालीन राज्यपाल बलिराम भगत जी द्वारा कलाकारो के स्वर्ग कहे जाने वाले जयपुर के जवाहर कला केन्द्र में दिया गया, वहीं राजस्थान रत्नाकर संस्था द्वारा श्री "रूपरामका लोकगीत पुरस्कार" से भी सीमा मिश्रा जी को देश के तत्कालीन गृहमंत्री श्रीमान शिवराज पाटिल जी द्वारा सम्मानित किया गया ।

सीमा मिश्रा को स्वर सुरभि कलानिधि सम्मान, राजस्थान रत्न शिरोमणि सम्मान, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राजस्थान द्वारा संगीत सेवा गौरव सम्मान, राजस्थान दूरदर्शन द्वारा प्रख्यात महिला गायिका सम्मान, राजस्थान के अग्रणी समाचार पत्र दैनिक भास्कर द्वारा woman inspiration of Rajasthan award, zee tv channel राजस्थान द्वारा woomen empowerment award 2019 राज्य की महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमति ममता भूपेश एवं राज्य विधानसभाध्यक्ष सीपी जोशी जी द्वारा दिया गया है।

वही राज्य सरकार द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं के लोकगीत पाठ्यक्रम में भी सीमा मिश्रा को राजस्थान की लता मंगेशकर कहकर पढाया जाने लगा है।

पर किसी संगीत के क्षेत्र के बड़े नाम का पर्याय बन जाना अपने आप में एक अवार्ड है... भारत देश की स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर का पर्याय राजस्थान में सीमा मिश्रा को कहा जाता है, दरअसल "राजस्थान की लता मंगेशकर "सीमा मिश्रा को कहा जाता है यह एक तरह का अपने आप में बहुत बड़ा सम्मान है, अवार्ड है पुरस्कार है और इस अलंकरण के आगे सारे पुरस्कार गौण है।

इसी कारण राजस्थान में सीमा मिश्रा का नाम जुबान पर आते ही कानों में एक मीठी सी स्वरलहरी गूंज उठती है , और मानस पटल पर जीवंत हो उठता है मरूभूमि का गाता गुनगुनाता अल्हड़ स्वरूप ,राजस्थानी गीतों और भजनों का पर्याय बन चुकी सीमा मिश्रा की गायकी की सबसे बड़ी ख़ासियत है कि उनका सुरीलापन जो है ,गाना चाहे वाद्य यंत्रो की मधुर झंकार के साथ हो या बिना वाद्य यंत्रो के, सीमा के कंठ से निकले स्वर कभी विचलित नहीं होते ,अब तो यह स्थिति है कि राजस्थानी लोकगायन मानो सीमा मिश्रा की आवाज के बिना अधूरा सा लगने लग जाता है।

सीमा मिश्रा जी के गले में माटी का स्पंदन है जिसका उन्होने गायन के द्वारा विस्तार करके इस लोकसंगीत को विश्वस्तर तक पहूँचाया है वर्ना पहले यहाँ के लोकसंगीत संरक्षक जातियाँ जिनमें मांगणियार ढोली दमामी ढाडी आदि आते है के द्वारा सीमित स्थान विशेष एवं सीमित उनके जीवन काल तक ही सुना जाता था पर इन सभी लगभग ढाई हजार गीतो को अब सीमा मिश्रा जी की आवाज में रिकोर्डेड कैसेट के माध्यम से सुना जा सकता है ....सीमा मिश्रा जी ने विरह गीत,होली गीत,विवाह गीत के माध्यम से राजस्थान के पूर्व से पश्चिम एवं उतर से दक्षिण तक अपनी आवाज का लोहा मनवाया है....

जहां पश्चिम का लख्खी बिणजारा गीत उन्होने गाया तो हाड़ोती का देहाती ग्रामीण महिला का "जीरा" गीत गाया वहीं मेवाती भरतपुर का कृष्ण भजन रंग मत डारे रे सांवरिया गाया तो शेखावाटी बीकानेर का पीपली गीत उनकी विरह वेदना मे झरती स्त्री मन के साथ साथ उस विरासत और धरोहर को संभाल भी रही है जो युगो युगो से राजस्थान की पहचान रही है.. ..कुल मिलाकर सीमा मिश्रा जी ने छोटी सी चिरमी से चितौड़ गढ तक ,कैर से केसरिया बालम तक अपनी आवाज दी है...

वहीं मीरा करमा से लेकर राजस्थान के सम्पूर्ण लोकदेवी देवताओ दो जाटि बालाजी, सालासर बालाजी, खाटू श्याम, झुंझुनू की दादी रानी, मेहंदीपुर बालाजी करणी, जीण,तेजा, पाबूजी, भैरव और रामदेव जी की स्तुति वंदना सीमा मिश्रा जी ने अपनी आवाज के माध्यम से की है....तुलसी दास के द्वारा रचित भारतीय जन–जन के आराध्य श्री राम की स्तुति से लेकर राजस्थानी साहित्य के भीष्म पितामह कन्हैया लाल सेठिया द्वारा रचित प्रताप के गौरव और इस महान भूमि के गौरव गीत धरती धोरा री को सीमा मिश्रा जी ने अपनी ही आवाज से सहेजा है एवं राजस्थानी जनमानस के साथ साझा किया है, संरक्षित किया है। स्त्री विरह को सबसे सशक्त आवाज सीमा मिश्रा जी ने ही दी है,और यह आवाज पहुँची हैं दूर दिसावर तक, वह हर स्त्री के विरह की सहभागीदार बनी है भावना के गीतो का मूल स्वर प्रेम है किन्तु स्त्री विमर्श,विरह भी सीमा मिश्रा जी की मौशिकी पूरी तन्मयता से मार्मिक रचती है, गाती है। लोकगीतो में प्रतीक्षा ,विरहिणी नायिका का ह्रदयग्राही चित्रण,स्मृतियों सपनो में डूबा बिरही मन सीमा मिश्रा जी की मधुर मीठी आवाज में जन–जन के अन्तर्मन को तृप्त करता है।

पलायन हमारे जीवन की तल्ख़ हकीकत हैं बेहतर अवसर और जिंदगी की तलाश में लोग घर छोड़कर कहीं ना कहीं जाते ही रहे हैं,स्त्री का इतिहास ही परदेशी पति की पीर पर आधारित है ...इसलिए प्रवासन पर श्लोक में बहुत सारे गीत सीमा मिश्रा जी ने गाकर जीवंत कर दिया ढोला मारू ,मूमल के प्रेम को राजस्थानी जन जीवन में ....सीमा मिश्रा जी के विरह गीतो के स्वर कमाल करते है,इनके स्वर नारी मन की कोमल और बेहद मार्मिक संवेदनाओ का संसार रचते है ....सीमा मिश्रा जी के लोकगीत भाव रोपते है,दर्द समेटते है,संवेदनाएं रचते है ....सीमा मिश्रा जी की आवाज सहज सुरीली है तो वहीं विरह गीतो में सिंधु सा गाम्भीर्य रखती है, सुर इतने परिपक्व है कि हैरत में डाल देते है...इनके गीतो मे राजस्थान की बहुआयामी संस्कृति की झलक सुनने को मिलती है.....

लोकगायिका मतलब आम स्त्री की आवाज, तो कह सकते है कि सीमा मिश्रा जी राजस्थानी नारी के अन्तर्मन की आवाज है तो साथ ही साथ नारी विमर्श का सशक्त हस्ताक्षर है। लोकगीतो को जीवन का स्वच्छ और साफ दर्पण कहा जाता है ,जिसमें समाज के व्याप्त जीवन का प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है लोकसंगीत आदम अभिव्यक्ति है, पर नये सुर साज में सबसे सुंदर अगर किसी ने पिरोया है तो वो सीमा मिश्रा जी हैं....सीमा मिश्रा जी की सम्मोहन करती आवाज राजस्थानी जनमानस एवं लोक के सांस्कृतिक विस्तार को सहज समेट लेने में सक्षम है....वहीं सीमा मिश्रा जी की लाइव प्रस्तुतियाँ भी बरखा के बाद धरती पर उठती भीनी सुगंध की तरह मनभावन होती है। सीमा मिश्रा जी की आवाज को राजस्थानी लोकजीवन की उदात भावनाओं का पाठ्यक्रम कहा जाए तो सर्वस्वीकृत होगा ना? क्योकिं वो अपनी आवाज के माध्यम से जच्चा बच्चा,जनम मरण,परण,ग्रामीण कृषि,तीज त्योहार,गणगौर,के हर ग्राम्य सांस्कृतिक लोकरंग को समेटती है। राजस्थानी लोकजीवन के यथार्थ का ताना बाना बुनती सीमा मिश्रा जी की मौशिकी तो यही स्वर राजस्थानी पारिवारिक संबंधो को बड़े ही मनोवैज्ञानिक स्वरूप में अपने गीतों में समेटते है । संक्षेप में कहे तो राजस्थानी जनमानस हर उत्सव में हलवाई की मिठाई की तरह सीमा मिश्रा जी के गीतो को जरूर शामिल करता है, सुनता है,थिरकता है ।भले ही राजस्थानी भाषा को भारत के संविधान की आठवी अनुसूची में शामिल नही किया गया है पर सीमा मिश्रा जी ने इस राजस्थानी भाषा के संरक्षण में अपना अहम योगदान दिया है....

वीण कैसेट्स, दूरदर्शन एवं रेडियो चैनल पर उनके गीतों पर सुदूर दक्षिण भारत के कन्नड़ तमिल तेलगु श्रोताओं के कमेंट कि लोकगीत को समझ नही पा रहे है पर आवाज के कायल है, कहीं ना कहीं एक कलाकार के कला की ताकत है जो सामने वाले को सम्मोहन में बांधे रखती है।

सीमा मिश्रा जी ने राजस्थान की आत्मा, नृत्यो का सिरमौर,घूमर गीत जब गाया तो यह गीत रजवाड़ो से निकलकर आम जन के रास्ते होते हुए विश्व के लोकनृत्यो में चौथे स्तर पर आ गया, यह सब सीमा मिश्रा जी के गायन का ही प्रभाव था। वहीं इस घूमर को प्रादेशिक संस्कृति से भारतीय संस्कृति तक पहुँचाने के कारण ही इनको राजस्थान में घूमर गर्ल तक कहा जाने लगा ।

वहीं इसी घूमर की प्रसिद्धी के कारण राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल श्री मान अंशुमान सिह जी द्वारा प्लेटिनम डिस्क अवार्ड से सीमा मिश्रा को सम्मानित किया गया है।

घूमर जैसे लोकगीतो के माध्यम से सीमा मिश्रा जी ने आने वाली पीढीयों को अपनी सारी परंपराये, परिपाटी सफलतापूर्वक सोंपी है।

सीमा मिश्रा ने हजारों लोकगीत हिन्दी गीत देश की विभिन्न संगीत कंपनियो में गाये...वहीं देश के बड़े कलाकारो के साथ जिनमें सुरेश वाडकर,सुनिधि चौहान,विनोद राठोड़ ,के साथ मंच साझा किया।

जिस माधुर्य के साथ सीमा मिश्रा जी लोकगीत गाती है तो वहीं जनमानस को साथ जोड़ती है, उनके सुर राजस्थान की लोकसंगीत की संपूर्णता को प्रदर्शित करते है।

लोकगीत तो प्रकृति के उद्गार है,लोकगीतो के विषय सामान्य मानव की सहज संवेदना से जुड़े हुए है । कहा जाता है कि सामाजिकता को जिंदा रखने के लिए लोकगीतो लोकसंस्कृतियों को सहेजा जाना बहुत जरूरी है।

बस संक्षेप में कहे तो सीमा मिश्रा जी के स्वर राजस्थानी लोकसंस्कृति के साक्षात ज्ञानकोष हैं....
सीमा मिश्रा जी के स्वरों मे राजस्थानी परंपरा परिवार और प्रकृति और रिश्तों की संवेदना पर टिकी हमारी लोकधारा का अजस्त्र प्रवाह है

राजस्थानी संस्कृति का प्राणतत्व-लोकगीत, लोकसंगीत, लोकनृत्य, लोकसाहित्य

संस्कृति वह आधारशिला है जिसके आश्रय से जाति, समाज एवं देश का विशाल भव्य प्रासाद निर्मित होता है निरंतर प्रगतिशील मानव–जीवन प्रकृति तथा समाज के जिन–जिन असंख्य प्रभावों एवं संस्कारों से प्रभावित होता रहता है उन सबके सामूहिक रूप को हम संस्कृति कहते हैं मानव का प्रत्येक विचार तथा प्रत्येक कृति संस्कृति नहीं है पर जिन कार्यों से किसी देश विशेष के समक्ष समाज पर कोई अमिट छाप पड़े. वही स्थाई प्रभाव संस्कृति है । रामधारीसिंह दिनकर के अनुसार असल में संस्कृति जीवन का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है जिसमें वह जन्म लेता है अपने जीवन में हम जो संस्कार जमा करते हैं वह भी हमारी संस्कृति का अंश बन जाता है और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ–साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी भावी पीढ़ियों के लिए छोड़ जाते हैं इसलिए संस्कृति वह चीज मानी जाती है जो हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए है तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक सदियों के अनुभवों का हाथ है।

जहां तक राजस्थान की संस्कृति का प्रश्न है वह अपने प्राचीन इतिहास, परंपरारूढ़ियों तथा आदर्शों की समानता के कारण संपूर्ण भारतवर्ष की समग्र संस्कृति का ही एक हिस्सा है इसमें भी भारतीय संस्कृति के ही मूल तत्व समाहित हैं और भारतीय संस्कृति की परंपरागत अनुकरणीय विषेशताओं का निर्वाह इसमें हुआ है भारतीय संस्कृति के विशिष्ट एवं शास्त्र सम्मत शाश्वत आदर्श ही राजस्थान की संस्कृति के मूलाधार हैं फिर भी विशालतम देश के अलग–अलग प्रदेशों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा जनजीवन के जीवनमूल्यों में न्यूनाधिक अंतर स्वाभाविक है । उसी से हमारी विविधता में एकता वाली कहावत सत्य साबित होती है।

भारतवर्ष में राजस्थान की संस्कृति को उसके महान आदर्शों के कारण विशेष श्रद्धा की दृष्टि से देखा गया है यही नहीं कर्नल जेम्स टॉड जैसे विदेशी अध्येता ने भी इस भव्य संस्कृति की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है राजस्थानी बातों, ख्यातों तथा वीराख्यानों में राजस्थानी संस्कृति के दर्शन होते हैं, जिनमें वीरपूजा की भावना, स्वातंत्र्य प्रेम. धरती प्रेम. मरणपर्व शरणागत वत्सलता गोरक्षा दानशीलतात्याग, धर्मानुष्ठान, तीर्थव्रत आचार–विचार और रीति–नीति मुख्य रूप से उल्लेखनीय है। संस्कृति जन सामान्य के चित्त में संस्कार रूप में निवास करती है और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती है इस हस्तांतरण के लिए किसी प्रकार के प्रशिक्षण विशेष की आवश्यकता नहीं होती। स्वाभाविक रूप से यह सतत और सहज प्रक्रिया के तहत सदियों से चली आ रही है।

संस्कृति और सांस्कृतिक मूल्य सामान्यजनों के अंतर्मन में रहते हैं जिन्हें व्याख्यायित प्रदर्शित या विज्ञापित करने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता नहीं रहती. वे अनायास ही अवसर के अनुरूप प्रस्फुटित होते रहते हैं संस्कृति और सभ्यता का घनिष्ट और अटूट संबंध होते हुए भी जहां सभ्यता का झुकाव खास लोगों की और होता है वहीं संस्कृति का झुकाव आम लोगों की और होता है यदि संस्कृति और सभ्यता के साथ शिक्षा की बात करें तो शिक्षा और सभ्यता का घनिष्ट संबंध है सभ्यता के विकास में शिक्षा की अहम भूमिका रहती है लेकिन यह भी सत्य है कि जैसे–जैसे सभ्यता का विकास होता है स्वाभाविकता कम होने लगती है और व्यक्ति औपचारिकताओं से इतना घिर जाता है कि उसका सब कुछ बदला–बदला सा लगने लगता है सभ्यता की वृद्धि के साथ स्वाभाविकता का ह्रास होता है। सभ्यता का संबंध मस्तिष्क से है वहीं स्वाभाविकता का हृदय से है। बहुत कम ऐसा देखने में आता है जब मस्तिष्क और हृदय में एकता हो प्रायः हृदय के विषय में मस्तिष्क सदा झूठ बोलता है कितनी बार मनुष्य के हृदय में क्रोध उत्पन्न होता है लेकिन उसका मस्तिष्क शांत और विनय की बातें करता पाया जाता है हृदय में लोभ रहता है पर मस्तिष्क निःस्पृहता दिखलाता रहता है बहुत ही कम उच्चकोटि के ऐसे सत्पुरुष होंगे जिनके हृदय और मस्तिष्क में मेल हो। अतएव जिसे आजकल सभ्यता कहते हैं. वह एक प्रकार की अस्वाभाविकता है।

संस्कृति और लोक–साहित्य के संबंध की बात करने से पूर्व लोक–साहित्य से संबंधित कुछ बातों परविचार करना जरूरी प्रतीत होता है लोकसाहित्य हृदय का साहित्य है जिसमें नैसर्गिकता के दर्शन होते हैं इसमें शांति स्वभाव, आत्मैक्य और आपसी विश्वास के भाव पलते हैं सहृदयता सरलता. निर्भयता एवं प्रगाढ़ प्रेम के नमूने लोक साहित्य के सिवाय कहां मिलते हैं ? जिसे हम शुद्ध साहित्य कहते हैं उसकी धारा पूर्ण रूप से तो नहीं पर काफी हद तक मस्तिष्क के तर्कजालों में फंसी हुई नजर आती है इस साहित्य में वास्तविक व्यापार की बजाय कृत्रिम व्यापार अधिक नजर आने लगा है।

जबकि ज्ञान–विज्ञान, व्यवहार वाणी. वेष–भूषा आदि वास्तविक व्यापार लोकसाहित्य की जान है लोकसाहित्य तो प्रकृति की पूजा का साहित्य है। अतः लोकसाहित्य स्वाभाविकता के अधिक नजदीक का साहित्य है। इसी कारण वह संस्कृति का प्राण–तत्त्व होने का दावा कर सकता है।

लोकसाहित्य मनुष्य–जीवन की एक चिरसंगी विशेषता है लेकिन यह सदियों से पुनीत गंगधारा की तरह लोक उद्धारक के रूप में सवेग बहकर भी विद्वानों के निकट तुच्छ वस्तु बना रहा है पिछले कुछ समय से यह प्रत्यक्षदर्शी 'लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः' जैसे सुवाक्यों सहित अध्येताओं के लिए नया मोड़ लेकर चली है अथर्ववेद का सूत्र माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथ्वीव्याः' (यह भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूं) आज विद्वद्जनों की आत्मा में लोक के अपनत्व के प्रति प्रेरणा का उजास कर रहा है उसकी स्निग्ध ज्योत्स्ना चारों ओर फैल रही है हमारा किसान इस सूक्त के तात्पर्य को पीढ़ियों से क्रियान्वित करता आया है वही लोक का महाप्राण और उसके जीवन का सच्चा प्रतिनिधि है साहित्य महोपाध्याय श्री नानूराम संस्कर्ता के अनुसार लोकसाहित्य एक तीर्थधाम है तो डा. वासुदेवशरण अग्रवाल के शब्दों में 'लोक' हमारे जीवन का महासमुद्र है जिसमें भूत भविष्य तथा वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है लोक राष्ट्र का अमर स्वरूप है लोक कृत्सनज्ञान और सम्पूर्ण अध्ययन में सब शास्त्रों का पर्यवसान है।

अर्वाचीन मानव के लिए लोक सर्वोच्च प्रजापति है लोक की धात्री सर्वभूत माता पृथ्वी और लोक का व्यक्त रूप मानवयही हमारे नए जीवन का अध्यात्मशास्त्र है । वर्तमान युग में लोकसाहित्य से अनेक रूपों का ज्ञान होता है हिन्दी साहित्य जगत में साहित्य शब्द के साथ लोक विशेषण लगाकर लोकसाहित्य अपना पार्थक्य प्रकट करता हुआ पर्याप्त प्रचलित होता जा रहा है यह साहित्य धारा अनवरत रूप से बहती रही है इसका विकास मानव मन की अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों से हुआ है इसमें लोकगीत, लोकनाट्य, लोकानुरंजन और लोकपरंपरा आदि सम्मिलित हैं इन तत्वों से जनसामान्य के सामाजिक जीवन आदर्शों की रचना हुई है यह मौखिक रूप में

प्रचलित साहित्य ही लोकसाहित्य कहलाता है आजकल साहित्य में शुद्ध साहित्य और लोकसाहित्य दो रूप माने जाते हैं शुद्ध साहित्य का आधार शिक्षा है मनुष्य की बाह्य प्रवृत्तियों से जो विकास होता है उसका माध्यम शिक्षा है लेकिन लोकसाहित्य की आत्मा शिक्षा में नहीं होकर लोकमानस में निहित है और इसका शरीर सामाजिक विश्वासों तथा मान्यताओं से गठित है लोक सरलतायुक्त है और शिक्षा प्रवंचनापूर्ण अतः स्वाभाविक रूप से लोकसाहित्य सरलतायुक्त है।

भारतवर्ष में राजस्थान प्रांत लोकसाहित्य के क्षेत्र में एक अमूल्य संपति का अखूट खजाना है। इस प्रदेश की संस्कृति ने अद्भुत शौर्य, सौंदर्य और मानवीय मूल्यों की स्थापनाएं की हैं असंख्य अभावों से घिरी इस मरुधरा के निवासियों ने प्राकृतिक आपदाओं, अकालअनावृष्टि तथा खेती आदि के लिए साधन–सुविधाओं के अभावों को हंसते–हंसते स्वीकार किया है. ये अभाव यहां के निवासियों के मन से उमंग उल्लास और उत्साह को कम नहीं कर सके। अपनी जीविका उपार्जन के लिए संतोष के पश्चात यहां के निवासियों का लगभग सारा अवकाश काल लोक–संस्कृति की उन्मेशपूर्ण गरिमा में ही लगता रहा।

यहां के इतिहास में पुरुषों ने वीरत्व की अक्षुण्ण छाप छोड़ी है महिलाओं ने इतिहास को जौहर की ज्वालाओं के अक्षरों से मंडित किया है दातार और दानवीरों ने अपने धन को जनहितार्थ कोड़ियों के भाव बहाया और अभावों से जकड़े इस मरुप्रदेश को स्वाभिमानी बनाए रखा।

इस प्रदेश के गांव–गांव और ढाणी–ढाणी में राजस्थानी लोककला और लोकसाहित्य की स्पंदनपूर्ण थाती के दर्शन मिलते हैं। प्रेम और अनुराग की उमंगपूर्ण कथाओं में ढोला–मारू, जलाल–बूबना नागजी–नागवंती. रिसाळू–नोपदे, सुल्तान–निहालदे की कथाएं विद्वता और बुद्धिमानी से परिपूर्ण राजा भोज राजा विक्रमक्रोड़ी और क्रोड़ीधज सेठों की कथाएं. लोकगाथाओं के रूप में बगड़ावत और पाबूजी जैसे वीरात्मक महाकाव्य, पणिहारी, सूवटियो, जलौ, सुपनौ, ओळूं जैसे सरस मुक्तक गीतों का अखूट भंडार राजस्थान के लोकसाहित्य का अनुपम वैषिश्ट्य है इन लोक सांस्कृतिक उपलब्धियों में सहज मनोभाव चारित्र्यपूर्ण नीतियां और जीवन की नानाविध अनुभूतियों के हीरे–मोती बिखरे पड़े हैं

राजस्थान की संस्कृति सुरंगी संस्कृति है। यहां की धरती राग और रंग की धरती है लोकगीत और लोकनृत्य के संगीत के साथ सारा मंडल झूमता है। सुरीले स्वरों में माढ राग में केसरिया बालम रतनराणा मूमल ओ सपनों कुरजां काछबियो, बायरियों इत्यादि गीतों के एक–एक बोल जीवन रस को अमृतमयी करते से लगते हैं सगाई–विवाह के समय बन्ना – बन्नी, बधावाजल्लो, सोल्लो, मेहंदी कोयलड़ी और सीखड़ली जैसे गीत लोकजीवन का ज्ञान तथा लोकव्यवहार की शिक्षा देते हैं।

रात्रि जागरण–जम्मों में हरजस, बाणी. महापुरुषों के जीवनचरित्र पाबूजी एवं बगड़ावतों की पड़ ख्यात आदि सरस राग–रागिनियों में प्रस्तुत किए जाते हैं लोक संगीत की सुरंगी और अंजसयोग्य परंपराओं को राजस्थान की मरू कोकिला सीमा मिश्रा ने अपने सुरीले स्वरों में लयबद्ध करके तथा यहां की कुछ खास जातियों यथा मांगणियार, दमामी ढोलीढाढी, लंगा आदि ने अनवरत रखा है जो कि आज विश्वस्तर पर अपनी पहचान बनाकर लोगों की चहेती बनी हुई है लोकवाद्यों में मोरचंग, मुरला. नड़, अलगोजाकमायचा और सारंगी जैसे वाद्य सबको मोहित करते हैं रावणहत्थे पर भोपा जाति के लोग लोकदेवताओं तथा आदर्श महापुरुषों की कीर्ति का बखान करते हैं।

संस्कृति, सभ्यता लोक–साहित्य तथा इससे जुड़े तमाम तथ्यों पर जितना–जितना गहराई से विश्लेषणात्मक दृष्टि से विचार करते हैं तो लगता है कि किसी भी देश की संस्कृति का प्राण तत्व उसका लोक साहित्य होता है राजस्थानी संस्कृति भी इसका अपवाद नहीं है यदि राजस्थान की संस्कृति की एक–एक विशेषता को लेकर विचार करें तो पाएंगे कि हर विशिष्टता को लोक ने सींचा है राजस्थानी संस्कृति की महत्त्वपूर्ण और अनूठी विशेषता शरणागत रक्षा और मर्यादा पालन है जिसके कारण यह संस्कृति विश्व में प्रतिष्ठापित हुई। इस विशेषता को लोकसाहित्य ने अपनी कहावतों, लोकगीतों लोकाख्यानों तथा मौखिक बातों का अभिन्न हिस्सा बनाया। "मां जायो अर घर आयो बराबर हुवै इस अनूठी भावना को संस्कार रूप में प्रतिष्ठापित करने का श्रेय लोक को ही है। राजस्थानी संस्कृति में जीवन–मूल्यों की चर्चा करें तो यहां कर्तव्य–पालना को जीवन का अहम मूल्य माना गया है इस संस्कृति को मानने वाले लोगों को संस्कार रूप में सिखाया जाता है कि यदि उनकी मातृभूमि उनके धर्म या किसी स्त्री पर कोई संकट आए तो उस समय उनकी रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का परम कर्तव्य है।

राजस्थानी संस्कृति कहती है कि उस रक्षा के दौरान यदि मरना पड़े तो भी पीछे नहीं हटना है और ऐसा अनेक बार हुआ इसलिए यहां के सांस्कृतिक जीवन में मरण त्योहार जैसी परंपरा को मान्यता मिली और वह भी शासन सत्ता या विशेष व्यक्तियों के लिए नहीं राव और रंक सबके लिए समान रूप से यह त्योहार मनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। परंपराएं तथा प्रथाएं इतिहास की देन हुआ करती हैं लोकमानस में कुछ मान्यताएं बनती हैं जो कि लोक के लिए 'महाजनो येन गतः सः पंथा के आदर्श के आधार पर जन–जन के लिए ग्राह्य हो जाती है राजस्थानी जनमानस में ऐसी ही कुछ मान्यताएं है– जैसे कब और कैसी परिस्थिति में आदमी को अपने कर्तव्य निर्वहन हेतु मरने से भी नहीं हिचकना चाहिए, कब और कैसी परिस्थिति में खुशी मनाने में पीछे नहीं रहना चाहिए. कब और कैसे जीवन का आनंद लेना ही चाहिए। ऐसी भावना के परिचायक और लोक में आदर प्राप्त दो आधारभूत दोहे उल्लेखनीय है

रण चढणकंकण बधणपुत्र बधाई चाव।
औ तीनूं दिन त्याग राकहा रंक कहा राव।।
धर जातां भ्रम पलटतां त्रियां पड़ंतां ताव।
तीन दिहाड़ा मरण राकहा रंक कहा राव।।

हमारी संस्कृति के इसी भाव को परिलक्षित करते हुए लिखा गया कि अवसर पर मरने वाले को इस लोक में सुयश मिलता है तथा परलोक में प्रभुता प्राप्त होती है

अठै सुजस प्रभुता उठै. अवसर मरियां आय।
मरणों घर रै मांझियांजम नरकां ले जाय।।

मर्यादा पालन, वचन–पालना तथा शरणागत–वत्सलता के उदाहरण राजस्थानी लोकजीवन में कदम–कदम पर देखने को मिलते हैं यहां के लोकजीवन में ऐसे अनेक चरित्र हैं जो इन्हीं खूबियों के कारण लोक देवता. लोकसंत. जूझार भोमियां पीर आदि संबोधनों से गांव–गांव और घर–घर में पूजनीय हैं

इन महापुरुषों ने अपने जीवन से लोगों को त्याग तथा समर्पण के साथ–साथ स्वाभिमान के साथ मर्यादा–पालन का सन्देश दिया। इन पुण्यात्माओं की यह विशेषता रही कि इन लोगों ने जन सामान्य को जाति–पांति संप्रदाय तथा उच्च–निम्न के दायरों से बाहर निकालने की पुरजोर कोशिश की। राजस्थानी लोकजीवन में प्रचलित एक दोहा इस बात की साख भरता है कि यहां के पांच लोक देवता जो कि हिंदू परिवारों से संबंधित रहे हैं उन्हें पंचपीर कहा जाता है जो कि मुस्लिम संस्कृति के संतों के लिए संबोधन है

पाबू हड़बू रामदे मांगलिया मेहा।
पांचूं पीर पधारियागोगाजी जेहा ।।

पर्यावरण संरक्षण के लिए यहां के लोकसाहित्य में पेड़ों में देवत्व स्थापित किया गया। अलग–अलग देवताओं के नाम से अलग–अलग वृक्षों की पूजा का विधान किया गया। गांव–गांव में खेजड़ी अर गांव–गांव में गोगो कहावत इस बात की साक्षी देती है देवताओं के नाम से एक–एक पेड़ ही नहीं पूरे के पूरे खेत के खेत संरक्षित किए गए हैं जिन्हें गोचर, बणी. ओरण इत्यादि नामों से पुकारा जाता है। इन संरक्षित वनों में से कोई व्यक्ति हरे वृक्ष को काटना–छांगना तो दूर रहा. वहां से सूखी लकड़ी तक नहीं उठाता। राजस्थान के गांव–गांव में ऐसे उदाहरण आज भी मौजूद हैं यहां के लोकगीतों में वृक्ष काटने वाले को सामाजिक स्तर पर फटकार लगाकर ऐसा नहीं करने की शिक्षा दी जाती है. यहां खास प्रचलित बिनाणीड़ो लोकगीत की ये पंक्तियां उल्लेखनीय है जिनमें पेड़ के मानवीकरण के साथ लोकमानस की संवेदना प्रकट हुई है

तूं तो खाती रा बेटा गजब गुजारी, रस्तै रो काट्यो हरियो रूंखड़ो।
आवता–जावता छायां रै बैठता, थाक्योड़ा लेता विसरामड़ी
चक–चक करती चिड़ियां बैठती. गायां बैठती ओ पूरी डोढ सौ ।।

राजस्थान की संस्कृति में स्वामिभक्ति को बहुत उच्च स्थान पर रखा गया है। यहां लोकजीवन में एक कहावत प्रचलित है– सौ सुक्रत इक पालड़ै अर एको साम धरमअर्थात सौ सुकृत्य के बराबर एक स्वामिभक्ति का मूल्य होता है पन्ना धाय, वीरवर दुर्गादास राठौड़ जैसे उदाहरण हमारे सामने है. जिन्होंने स्वामिभक्ति के अमर उदाहरण प्रस्तुत किए हैं पन्ना धाय यदि अपने राजपरिवार के राजकुमार को बचाने के लिए अपने जिगर के टुकड़े को मौत के मुंह में सुलाने की हिम्मत कर पाई तो इसके पीछे संस्कारों की ताकत काम कर रही थी। दुर्गादास के मन में एक पल के लिए भी राज्य सत्ता के प्रति मोह का भाव नहीं जगा और वास्तव में राजकाज चलाने के बावजूद भी अपने आपको अहंकार से दूर रख सका तो इसका कारण हमारी संस्कृति के ये संस्कार ही हैं जिन्होंने उनके मन में इतनी दृढ़ता के भाव भरे। लोकसाहित्य में ऐसे ही महान चरित्रों को सदियों सदियों तक याद रखा जाता है स्वामिभक्ति के अनूठे कर्तव्य के कारण पन्ना धाय तथा दुर्गादास को लोक ने पलकों पर बिठाया है हर कहीं गीत–संगीत में बातों में नीति–व्यवहार में यह दोहा सुनाई दे ही जाएगा

माई जणै तो दोय जणके दाता के सूर ।
नीं तो रिजै बांझड़ी. (थारो) मती गमाजे नूर।।
माई एहड़ा पूत जणजेहड़ा दुरगादास।
माई एहड़ा पूत जण. जेहड़ा राण प्रताप। आदि

इसी तरह महाराणा प्रताप. अमरसिंह राठौड़ जगदे पंवार राव लूणकरण. हाडी राणी वीरवर जयमल्ल वीर पत्ता खींवो–बीजो. राजा भोज खापरो चोर. दीपालदे. कूंगरा बलोच. सोनगरा–मालदे गोरा–बादल, वीरमदे सुल्तना. ऊको भाणेज चूंडो

सादुळो बलूजी चांपावत, अनाड़सिंह ल्हालर, सजना ऊमा भटियाणी. सांथल–सोम, दूदो जोधावत जगमल मालावत जैसे सूरवीरों को जनमानस ने अपनी पलकों पर बिठाया है जिनकी लोककथाएं जनमानस की पथप्रदर्शक बनी हैं मर्यादापालन, वचन प्रतिपालन तथा वीरोचित कृतत्व के कारण पाबूजी राठौड़, तेजाजी, गोगाजी आदि चरित्रों को लोगों ने लोकदेवता मानकर अपने ह्रदय मंदिर में स्थापित किया है लोकसाहित्य का अहम हिस्सा है– लोकगीत।

जनमानस ने अपने राष्ट्र. समाज तथा परिवेष में से ऐसे चरित्रों को अपने लिए आदर्श माना जो उनके जीवन को धन्य कर सकते थे ऐस चरित्रों को प्रसंगवशात सुख दुख पर्व–त्योंहार हर उत्सव पर याद किया जाने लगा. जो पीढी दा पीढी आज भी प्रचलित है ।

लोकगीत विषाद को मिटाने शोक को समेटने और दुख को मेटने वाले नित नए उपदेश हैं। विवाह त्यौहार पुत्र जन्म पर हर्ष का भाव है वहीं कहीं बेटी की विदाई के समय ये लोकगीत लोकिक दुख की तीव्रता को सहन करने की शक्ति प्रदान करते हैं। कहीं–कहीं मृत्यु के अवसर भी लोकगीत तथा भजन आदि गाकर शोकसंतप्तों को उस असहनीय संकट को सहन करने का संबल देने का काम किया जाता है राजस्थान में वृद्धों की मृत्यु पर हर के हिंडौळै तथा शिशु की मृत्यु पर छेड़े गाए जाते हैं ये मूलत: विरहगीत है जिन्हें झुरावा कहा जाता है। ये लोकगीत विशुद्ध भावों से परिपूर्ण होते हैं इनमें कोई दिखावा नहीं कोई कृत्रिमता नहीं. कोई बड़े या छोटे का भाव नहीं। गांव की सभी औरतें एक साथ मिलकर गाती हैं तीज तथा भात के गीत किसी भी भाई–बहिन को विह्वल कर देते हैं। ओळूं, आंबो, इमली, इकथंभियो, महल, उमराव, निहालदे, नींबू, नारंगी, नीमड़लौ, नीमड़ली, नागजी, नींदड़ली, बड़लो, बांवळिया, बदळी, पीपळी, पपैयो, पन्नामारू, पनजी, मरवो, मूमल, मिरगो, महल, सूवटो सपनो कुरजां, कसूंबो, लहरियो, जल्लो, हिंडौळो, आदि लोकगीतों का दाम्पत्य–प्रेम तथा आनंदित जीवन के लिए जितना महत्व है उतना अन्य किसी काव्य का नहीं है ।

राजस्थानी संस्कृति का प्राणतत्त्व यहां का लोक साहित्य है तो इस लोकसाहित्य का प्राणतत्त्व यहां के लोकजीवन में प्रचलित शील और साहस के कथात्मक गीत हैं सुपियार दे हंजर, बेना बाई. चंद्राळी, निहालदे, जसमल, सजनां जतणी, उदली भीलणी के गीत ऐसे प्रसिद्ध तथा उज्ज्वल कथानक हैं जो कि किसी भी सहृदय को सहज आकर्षित करते हैं ।

इन गीतों की नायिकाएं कोई महारानियां सेठानियां या बड़ी ठकुरानियां नहीं थीं लेकिन सामान्य हैसियत वाली इन महिलाओं ने अपने शील और साहस के बल पर हंसते–हंसते मृत्यु तक का आलिंगन कर लोक के मन को मोहा और आज युगोंयुग बीतने के बाद भी लोक के ह्रदय की अतल गहराइयों में बड़े सम्मान का पद पाए हुए हैं जन–जन का कंठहार बनीं ये कथाएं गीत बनकर गूंजती हैं राजस्थानी लोकसाहित्य की इन कथाओं को पढ़कर या सुनकर लगता है कि नारी साहसोदधि में पतिव्रत धर्म की हिलोरें बड़े वेग से प्रवाहित होती हैं उनकी भाव लहरियां–दृढ़ता सबलता और बड़े धैर्य के साथ तरंगित होती हैं जिनमें अनेक राजा–महाराजाओं की लोलुपता विलीन हुई है। ऐसी–ऐसी सती नारियां हुई हैं जिन्होंने अपने पति के समक्ष राजा ही क्या देवताओं तक का तिरस्कार कर दिया। वे अपने स्वामी के सामने किसी को कुछ भी नहीं मानतीं। इन्होंने अपने घर. खेतपशु तथा परिवेश में भले ही कितने अभाव हो संकट और परेशानियां हो लेकिन अपनी चीजों के सामने दूसरों की धन–संपत्ति और रूप–यौवन को तृणवत समझ कर ठुकराया है राजस्थानी लोकगीतों में से एक गीत जसमल ओडणी का गीत है. जिसकी नायिका जसमा का चरित्र कठिन परिश्रम करके अपने आत्मबल के द्वारा राजप्रासाद के ऐश्वर्य को सहज ही ठुकरा देती है

जसमल एक ओड जाति की स्त्री थी. जो अपने परिवार के साथ तालाबों की खुदाई का कार्य करती थी जोधुपर के राव खंगार ने जब जसमा को देखा तो वह उसके रूप–सौंदर्य पर मुग्ध हो गया। राजा ने जसमां को अपनी रानी बनने का प्रस्ताव दिया तथा ओड परिवार के साथ उसके संकटों के सामने अपने राज परिवार के सुखों की एक–एक बात कहते हुए जसमल को अपनी रानी बनने का आग्रह किया। जसमा को खंगार की बातों में कोई रुचि नहीं थी क्योंकि वह अपने पति को ही परमेश्वर मानती थी। चूंकि गरीब परिवार राजा का विरोध नहीं कर सकता था अत: जसमां ने अपने परिवार सहित रात को उस स्थान से किसी अन्य स्थान की और प्रस्थान कर दिया। राव खंगार तो जसमां के प्यार में पागल था तथा उसे अपनी अकूंत धन–संपदा तथा राजसत्ता का नशा भी था अत: वह जसमा क्या संसार की किसी भी मोहक स्त्री पर अपना हक मानता था ।

अतः राव खंगार जसमां के दल के पीछे चढ़ा और शीघ्र ही उसने जसमां को आ पकड़ा जसमां ने राव खंगार को विनती की कि मैं आपकी बेटी जैसी हूं आप मेरे पिता तुल्य हो लेकिन राव खंगार की कामुकता कम होने का नाम नहीं ले रही थी। जसमां ने अपने शील की रक्षार्थ हाथ में तलवार उठाई और मरने मारने को उतारू हो गई। जसमां और राव खंगार के बीच हुए वार्तालाप में जसमां के उज्ज्वल विचारों से राजा का हृदय साफ हो गया। उन्होंने अपनी फौज को घर लौटने का हुकुम देकर स्वयं वहीं जीवित समाधि ले ली गीत की कतिपय पंक्तियां देखिए

राजाजी बुलावै औ जसमल ओडणी ओ जसमल महल जोवण म्हारा आव,
कांई तो जोवां थारै महलां रो ओभूल्या राजा म्हांनै म्हांरी सरक्यां रो कोड।
राजाजी बुलावै औ जसमल ओडणी ओ जसमल कंवर जोवण म्हारा आव,
कांई तो जोवां थारै कंवरां रो ओभूल्या राजा म्हांनै म्हारै ओडड़ियां रो कोड।
ठरक्योड़ो राजा फौज बणायर, चढ़ियो वार, कांकड़ जांवतां नरपत नावड़यो ओ,
म्हूं छू राजाजी थारी धीवड़ी ओबाबल राजा थैं म्हारा जळहर जामी बाप।
मरण–मारण नै मच गई ओ कोपी जसमल हाथ में झांप दुधार।

राजा ने अपनी रानियों का घोड़ों तथा और अन्यान्य ऐशो आराम का लालच दिया लेकिन जसमां अपने परिवार के सामने सारे ऐष्वर्य को धत्ता बताती रही। जसमां का स्वाभिमान और शील इतना उच्च है कि जहां राव खंगार उसे प्यारी. तनक मिजाजण ऊजळदंती केसर–वरणी आदि नामों से संबोधित करते हैं वही जसमल राव खंगार को अकल अलूणां राजवीभूल्या राजाभोग भूपतकांमी राजा पापी राजाकुबधी राजाजुलमी राजाठरक्योड़ा ठाकरबगनों राजा आदि संबोधन से संबोधित किया है।

किसी भी सहृदय की इस गीत को सुनकर इसके मर्म को महसूस करके स्वाभाविक सी प्रतिक्रिया होगी वाह! गीत क्या है गीता के संपूर्ण अध्यायों का सार है सुख–संपत्ति में शील का पालन करना कोई बड़ी बात नहीं है उसमें भी बहुत बड़ा समर्पण अपेक्षित है तो जहां अभावों तथा दुर परिस्थितियों में जसमां ओडणी की तरह अपने स्वत्व और सतीत्व की रक्षा करना कितना कठिन काम है सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है यही लोक की विशेषता है प्रलोभनों, स्वार्थों तथा लालचों के वषीभूत होकर प्रतिपल संसार में मर्यादा को तार–तार करने वाले लोग बहुत हैं जो कीड़े–मकोड़ों की तरह जन्मते और मरते हैं लेकिन जसमां की तरह उज्ज्वल चरित्र विरले ही होते हैं जिन्हें लोकजिह्वा पर आसन मिलता है हर कहीं आदर्श पतिव्रता तथा शीलवान नारी के रूप में जसमल खड़ी नजर आती है ।

मानव मन की विराट आत्मानुभूतियां लोकसाहित्य में पग–पग पर स्वर्णाक्षरों में मिलती हैं बालक के लिए मां की सुमधुर लोरियां प्रियतम के लिए विरह में तड़पने वाली नववधू की तड़पन, विधवा की कसक, कन्या का हास्य, झूले की बहार, पति–पत्नी के मिलन–विरह की स्थितियां, उलाहने पहेलियां आदि मानव जीवन से एकात्मकता रखते हैं इन गीतों तथा बातों में बालविवाह वृद्धविवाह तथा बेमेल विवाह के दुष्परिणामों की सूचनाएं समाज के एक–एक जन को दे दी जाती है लोकसाहित्य का आदर्श और ज्ञान मानव व्यवहार में छाया की भांति साथ–साथ चलता है वह रिकार्ड बजने रेडियो सुनने. सिनेमा देखने या हमारे मनोरंजन मात्र के लिए साधन मात्र नहीं है वरन जन–जन की मनोरंजित और जागृत व्याख्या है वह जीवन के हर एक पहलू का परम प्रतिष्ठित गौरव है। समाज की ऊंची से ऊंची चोटी से लेकर नीची श्रेणी तक इसकी शिक्षा का प्रसार है वह केवल गिने–चुने प्रथायुक्त विषयों के पीछे ही नहीं रहता। वह तो लोक के स्वस्थ तथा निश्छल अभिव्यंजनास्वरूप मानवीय तत्त्वों का प्रदर्शन करता है उसका वास्तविक लक्ष्य जीवन के जटिल मार्ग का रसमय निर्देशन करना एवं भावों को सरल भाषा में उतारकर अपने पवित्र सामाजिक उद्देश्यों को पूरा करना है।

लोकसाहित्य में कितनी ही ऐसी काव्य व्यंजनाएं हैं जो हमारे पारिवारिक संबंधों को सशक्त बनाती है लोकसाहित्य प्रत्येक राष्ट्र की आत्मा होता है। इसके द्वारा प्राकृतिक प्रवृत्तियों का परिष्कार करके सुख से गाए जाने वाले लोकगीत अत्यंत रंजक और रमणीय होते हैं कृत्रिम सौंदर्य की व्यवस्था के अभाव में मनुष्य को अपने मनोरंजन की स्वयं ही व्यवस्था करनी पड़ती है छोटे नाडों पर मोटे टीबों पर, खेतों और खोड़ों में पगडंडियों एवं पहाड़ों पर सीरसांझे में ईके–चेजे पर संयोग–वियोग में रम्मत–रास

के रागात्मक अवसर पर सृष्टि के नाना रूपों के साथ मानव भावनाएं गीत बनकर लोककंठ से निकलती है खेती में हल चलाते हुए तेजा–गायन, श्रमकार्यों में राम–भगत कुओं पर दूहों का संगीत, पशु चराते हुए डोरी का गाना. फाल्गुन के महिने में धमळ बोलना, मानव प्रकृति के नाना रूपों का सहज प्रकटीकरण है मनुष्य के इन्हीं गानों का नाम लोकगीत है मानव जीवन की उसके उल्लास की, उसकी उमंगों की, उसकी करुणा की, उसके रुदन की, उसके समस्त सुख–दुख की कहानी गीतों में चित्रित है

मानवीय जीवन की प्रसन्नता झुंझलाहट, क्रोधराग, विराग. प्रेम या नफरत के सभी भाव अपने सर्वोत्कृष्ट रूप में लोकसाहित्य के विविध रूपों यथा लोकगीत. लोकवार्ता, लोक–मान्यताएं. लोकव्यवहार आदि में देखने को मिलते हैं जनजीवन में व्याप्त रहने वाली इच्छाएं तथा आकांक्षाएं जितनी लोकसाहित्य में स्पष्ट तथा सजीव होती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है।

राजस्थानी लोककथाओं में लोकव्यवहार की सीख के लिए लाखीणा दोहा कहने की परंपरा रही है जो कि गाहे–बगाहे सभी कथाओं में किसी न किसी बहाने सीख–उप्देशार्थ आ ही जाता है एक लाखीणा दोहा देखिए :

बैठक बैठज्योपाव ठामज्योत्रिया मारग टळ।
पहरो देतां साचो दीजै, आई रीस निवार।।

घर से रवाना होते हुए व्यक्ति को उसके परिजनों द्वारा दी जाने वाली यह सीख है कि कहीं भी अनजान जगह पर बैठते हुए सतर्कता जरूरी है बैठने के स्थान को पांव मार कर जांच लेना जरूरी है रास्ते में मिलने वाली पराई स्त्री से बचकर रहना चाहिए. पहरे की वक्त कोई लापरवाही नहीं हो काम के समय क्रोध को रोक कर सही अंजाम तक पहुंचना चाहिए।

यह नीतिपूर्ण बात किसी भी व्यक्ति को लोकव्यवहार की अनायास ही शिक्षा दे जाती है कुछ ऐसी भी परिस्थितियां आती हैं जहां बड़े से बड़े नुकसान को सहन करके आगे के जीवन को संभालने–सहेजने की आवश्यकता पड़ती है।
राजस्थानी लोकजीवन में विनोद–विनोद में ऐसी असंभव बात कहकर यह उपदेश दे दिया जाता है इन बातों में नीति के मूल अभिप्राय बुद्धि व्यवहार सहित चित्रित रहते हैं। दो उदाहरण देखिए :

जाट कहे सुण जाटणीई गांव में रहणो।
ऊंट बिलाई ले गई. हां जी हां जी कहणो।।

किसान के ऊंट की चोरी पर बुलाई गई पंचायत में पंच परमेष्वरों से निर्णय सुनाया कि किसान के ऊंट की किसी ने चोरी नहीं की बल्कि इसके ऊंट को तो बिल्ली ले गई। कितनी असंभव बेतुकी और पीड़ादायक बात है लेकिन किसान अपनी दुखी पत्नी को धीरज रखकर आगे के जीवन की सरसता का जुगाड़ करता है। इसी तरह सोने के कीड़ा लगने तथा बच्चे को चील द्वारा उठा लेने की बात है –

करता रै संग कीजिए, सुण रै राजा भील ।
सोनै रै घुण लागग्यो. छौरो लेगी चील।।

लोकसाहित्य का एक अहम हिस्सा लोक कहावतें हैं जो कि जनता के दैनंदिन व्यवहार में प्रयुक्त होने वाले सारगर्भित एवं शोधपरक छोटे–छोटे कथन हैं इनमें जीवन की तीक्ष्ण आलोचना देखने को मिलती है। ये कहावतें ज्ञानीजनों की उक्तियों का निरूपण है इन्हें व्यावहारिक जीवन के लिए मार्गदर्शक वचन कहें तो भी उपयुक्त ही होगा। स्थानीय स्तर पर घटित घटनाओं परिवेश में उपलब्ध रीति–नीतियों को लेकर कैसे सारपूर्ण वाक्य हैं बिना किसी व्याख्या के सारे माजरे को खोल कर रख देते हैं कतिपय उदाहरण देखिए

1. ठाकरां खळ खावौ ? कै आ ही गंडकां कनै सूं छुड़ाई है
2. ठाकरां ठाडा किसाक? कै कमजोर रा तो बैरी ही पड्या हां ।
3. चौधरी टांडै किया है? कै सांड हां । तो पछै छेरा कियां करै? कै नेट नै गऊ रा जाया हां ।
4 . सीतळा माता घोड़ो देई। अरे मूर्ख मैं तो खुद ही गधै चढूं।
5. मकोड़ो बोल्यो मां गुड़ री भेली ल्याऊं! मां कैयो बेटो कड़तू कांनी देख।
6. बोल्यो निकासी नै घोड़ो चाईजै। कै भाईड़ा घिरतो लेज्याई ।
7. सेठां के गोता? बोल्या करणी पोता। पूछ्यो दस्सा का बीसा? बोल्या ना दस्सा ना बीसा, करस्यां चळू'र देस्यां तेतीसा।

लोकसाहित्य की खासीयत यह है कि इसका कोई व्यक्ति विशेष रचयित नहीं होता या यूं कहें कि भले ही कोई व्यक्ति विशेष के मुंह से कही हुई बात ही क्यों ना हो लोक का हिस्सा बनकर वह व्यष्टि से समष्टि का अंग बन जाती है यही कारण है कि लोक साहित्य में कृत्रिमता के लिए कोई जगह नहीं होती। व्यक्ति हो या समूह यदि किसी कार्य के साथ उसका नाम जुड़ा रहता है तो उस व्यक्ति या समूह विशेष की अच्छाइयां और कमियां दोनों उस कार्य में झलकते ही हैं लेकिन लोकसाहित्य इस बाध्यता से देर है क्योकि लोकसाहित्य पर किसी व्यक्ति विशेष का व्यक्तिगत अधिकार नहीं होता वरन वह सभी व्यक्तियों का सामूहिक प्रतिनिधि है संस्कृति की भी यही पहचान है वह व्यक्ति या समूह विशेष की नहीं बल्कि जन सामान्य की परिचायक होती है

सांस्कृतिक मूल्यों के सामने व्यक्तिगत अहं या बड़े–छोटे के भाव का कोई महत्त्व नहीं रहता। ये मूल्य राजा तथा रंक सभी के लिए सहज स्वीकार्य होते हैं यही कारण है कि हम लोकसाहित्य को राजस्थानी संस्कृति का प्राण तत्त्व कहते हैं लोकसाहित्य के अंग स्वरूप लोकगीत, लोककथा, लोकवार्ता, लोकमान्यताएं, कहावतें, लोकोक्तियां, पहेलियां तथा नीति और लोकव्यवहार से संबंधित संवाद साहित्य राजस्थानी संस्कृति के अभिन्न तथा नियामक अंग हैं। ये जन–जन के कंठ से उद्‌भूत होकर पीढ़ी दर पीढ़ी को सदुपदेश देते हैं राजस्थान के जनजीवन की ये अभिव्यक्तियां उसकी सच्ची आत्मा है। राजस्थान और लोकवाङ्‌मय का संष्लिष्ट वर्णन इतिहास की शोभा है।

निष्कर्षतः गरबीले राजस्थान की गरबीली रीति–नीतियों एवं प्रीति–प्रतितियों को जानना–समझना हो तो यहां की लोकसंस्कृति, लोकसाहित्य एवं लोकमानस को समझना होगा।

डॉ. गजादान चारण

संदर्भ :

01. डॉ विक्रमसिंह राठौड़ः राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 03
02. पी.सरीनः भारतीय सभ्यता और संस्कृति की रूपरेखा, पृ02
03. पंडित रामनरेष त्रिपाठीः कविता कौमुदी पांचवां भाग
04 श्री नानूराम संस्कर्ता राजस्थानी लोकसाहित्य पृ.सं. 11
05 लाखीणा लोकगीतः पुष्पादेवी सैनी, पृ 38
06. श्री नानूराम संस्कर्ता रू राजस्थानी लोकसाहित्य, 101

आपणे लोक संगीत, कला, साहित्य, संस्कृति रो मान,
धोरा री धरती रो सम्मान

सीमा मिश्रा राजस्थान लोक संगीत-कला अकादमी पंजि०

अकादमी का टेग लाइन

(एक प्रयास... राजस्थानी लोक संगीत- कला, संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण, संवर्धन एवं सृजन का.....)

अकादमी का ध्येय वाक्य

नेति नेति चरैवेति चरैवेति

अकादमी का श्लोगन

आपणे लोक संगीत, कला, साहित्य, संस्कृति रो मान,
धोरा री धरती रो सम्मान

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

शिव विनायक शर्मा

मुख्य सचिव
सीमा मिश्रा राजस्थान
लोक संगीत-कला अकादमी